मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MHD–21

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)

(एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2025

एम.एच.डी.–21 : मीरा का विशेष अध्ययन

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रश्न संख्या 1 अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

   (क) आँखियाँ कृष्ण मिलन की प्यासी

   आप तो जाय द्वारका छाये, लोक करत मेरी हाँसी॥

   आम की डार कोयलिया बोलै, बोलत सबद उदासी॥

   मेरे तो मन (अब) ऐसी आवै, करवत लेहौं कासी॥

   मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, चरणकमल की दासी॥

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

(ख) ये तो पलक उघाडो दीनानाथ, मैं हाजिर (साजिर) कद
की खड़ी।
साजनिया दुसमन होय बैठ्या, सब नैं लगे कड़ी।
तुम बिन साजन कोई नहीं है, डिगी नाव मेरी समंद
बड़ी॥ 1॥
दिन नहिं चैन रैन नहिं निंदरा, सूकूँ खड़ी खड़ी।
बान बिरह का लग्या हिये में, भूलूँ न एक घड़ी॥ 2॥
पत्थर की तो अहिल्या तारी, बनके बीच पड़ी।
कहा बोझ मीरां में कहिये, सौ पर एक घड़ी॥ 3॥

(ग) जोगिया सों प्रीत कियाँ दु:ख होय।
प्रीत किया सुध नहीं मोरी सजी, जोगी मींत न कोई।
रात दिवस कल नाहिं परत है, तुम मिलियाँ बिन
मोई॥ 1॥
ऐसी सूरत या जग माहीं, फेरि न देखी सोई।
मीरां के प्रभु कब रे मिलोगे, मिलियाँ आनँद होई॥ 2॥

(घ) वै न मिले जिनकी हम दासी।
पात–पात वृन्दावन ढूँढ्यौ ढूँढि
फिरी सगरी मैं कासी॥ 1॥
कासी कौ लोग बड़ो विसवासी
मुख मैं राम बगल में फाँसी॥ 2॥

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

आधी कासी मैं बाँमण बाणियाँ
आधी कासी बसे संन्यासी ॥ 3 ॥
मीरां के प्रभु हरि अबिनासी
हरिचरणां की रहौं मैं दासी ॥ 4 ॥

2. मीरा के काव्य के द्वारा स्त्री के प्रश्न को किस रूप में समझा जा सकता है? स्पष्ट कीजिए। 10

3. मीरा की कृष्णभक्ति के क्या कारण थे? कृष्णभक्ति ने मीरा को किस प्रकार से लोकप्रिय बनाया? चर्चा कीजिए। 10

4. मीरा की काव्य–भाषा पर प्रकाश डालिए। 10

5. प्रगतिशील आलोचना में मीरा को किस प्रकार व्याख्यायित किया गया है? तर्क सहित स्पष्ट कीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : $2 \times 5 = 10$

(क) मीरा की विरह–वेदना

(ख) आंदाल

(ग) जनाबाई

(घ) मीरा की काव्यचेतना और लोक

× × × × ×

Downloaded from www.IGNOUBABA.com